

28 मार्च 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध:

1. चीन श्रीलंका में गहरे समुद्री बंदरगाह और हवाई अड्डे का विकास करेगा:

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

जैव विविधता एवं पर्यावरण:

1. क्या ऑस्ट्रेलिया की कार्बन क्रेडिट योजना एक 'आपदा' है?

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

E. संपादकीय:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध:

1. चीन-ताइवान संघर्ष को रोकना:

अर्थव्यवस्था:

1. डब्ल्यूटीओ की निवेश सुविधा वार्ता अवैध नहीं है:

F. प्रीलिम्स तथ्य:

1. आईसीएमआर फेफड़ों के कैंसर के प्रबंधन के लिए साक्ष्य आधारित मानदंड लाने के लिए तैयार:
2. 'भारत में 2015 के बाद से टीबी के नए मामलों में 16% की गिरावट आई:

G. महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

चीन श्रीलंका में गहरे समुद्री बंदरगाह और हवाई अड्डे का विकास करेगा:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध:

विषय: द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं वैश्विक समूह और भारत से जुड़े और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले करार।

मुख्य परीक्षा: भारत के पड़ोस में हाल के घटनाक्रम।

विवरण:

- श्रीलंका और चीन के बीच हालिया राजनयिक संबंधों में, श्रीलंका के बुनियादी ढांचे और अर्थव्यवस्था को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण वादे किए गए हैं।

बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए रणनीतिक समर्थन:

- प्रधान मंत्री दिनेश गुणवर्धने ने घोषणा की कि चीन ने श्रीलंका के सबसे बड़े द्विपक्षीय ऋणदाता होने के नाते वहां महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के विकास का समर्थन करने का वादा किया है।
- इस प्रतिबद्धता में श्रीलंका के विदेशी ऋण के पुनर्गठन में सहायता शामिल है, जो \$2.9 बिलियन आईएमएफ बेलआउट को सुरक्षित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।
- हालाँकि ऋण पुनर्गठन पर चीन का रुख अज्ञात है, जबकि श्रीलंकाई अधिकारियों का सुझाव है कि चीन पूर्ण ऋण माफी के बजाय ऋण अवधि बढ़ाने और ब्याज दरों को समायोजित करने का विकल्प चुन सकता है।
- इस रणनीतिक कदम का उद्देश्य क्षेत्र में चीन के हितों को बनाए रखते हुए श्रीलंका के वित्तीय बोझ को कम करना है।

आर्थिक पुनरुद्धार प्रयास:

- आवश्यक आयात के लिए विदेशी मुद्रा की कमी के कारण श्रीलंका को 2022 में संप्रभु ऋण डिफॉल्ट का सामना करना पड़ा।
- इस संकट के कारण महीनों तक विरोध प्रदर्शन और राजनीतिक उथल-पुथल हुई, जिसके परिणामस्वरूप तत्कालीन राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को पद से हटना पड़ा।
- जवाब में, चीन ने श्रीलंका को उसकी ऋण पुनर्गठन प्रक्रिया में सहायता करने और उसके आर्थिक विकास में योगदान देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

बुनियादी ढांचा विकास योजनाएँ:

- चीन ने कोलंबो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे और हंबनटोटा बंदरगाह सहित प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के विकास के लिए समर्थन की पेशकश की है।
- हालाँकि, चीन की भागीदारी की सीमा के बारे में विशिष्ट विवरण अभी तक सामने नहीं आया है।
- ये परियोजनाएँ श्रीलंका के विकास और कनेक्टिविटी के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक और आर्थिक महत्व रखती हैं।

चिंताएँ और भू-राजनीतिक निहितार्थ:

- हंबनटोटा बंदरगाह, जो पहले एक चीनी राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी को 99 वर्षों के लिए पट्टे पर दिया गया था, ने हिंद महासागर में चीन के बढ़ते नौसैनिक प्रभाव के बारे में भारत और अमेरिका जैसे पड़ोसी देशों के बीच चिंता बढ़ा दी है।
- श्रीलंका की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में विदेशी शक्तियों की भागीदारी इस क्षेत्र में चल रही भू-राजनीतिक गतिशीलता को रेखांकित करती है।

निष्कर्ष:

- श्रीलंका के बुनियादी ढांचे के विकास और ऋण पुनर्गठन का समर्थन करने की चीन की प्रतिबद्धता दोनों देशों के बीच गहरे होते संबंधों को दर्शाती है। हालाँकि, क्षेत्रीय भू-राजनीतिक

तनाव के बीच श्रीलंका की रणनीतिक परियोजनाओं में चीन की भागीदारी के निहितार्थों पर सावधानीपूर्वक निगरानी की आवश्यकता है।

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

क्या ऑस्ट्रेलिया की कार्बन क्रेडिट योजना एक 'आपदा' है?

जैव विविधता एवं पर्यावरण:

विषय: संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और गिरावट, पर्यावरणीय प्रभाव आकलन।

मुख्य परीक्षा: कार्बन क्रेडिट योजना।

विवरण:

- ऑस्ट्रेलिया की कार्बन क्रेडिट योजना को नए शोध के बाद आलोचना का सामना करना पड़ा, जिसने विश्व-अग्रणी पुनर्वनीकरण परियोजना में कमियों को उजागर किया।
- इस परियोजना का उद्देश्य कार्बन उत्सर्जन की भरपाई के लिए देश के रेगिस्तानी इलाकों के विशाल हिस्सों में देशी जंगलों को पुनर्जीवित करना था, लेकिन निष्कर्षों से महत्वपूर्ण मुद्दे सामने आए।

खराब प्रदर्शन करने वाला पुनर्वनरोपण:

- शोधकर्ताओं ने इसका पता लगाया की निर्दिष्ट वृक्षारोपण क्षेत्रों में से लगभग 80% में स्थिर वन विकास या यहां तक कि सिकुड़ते वुडलैंड्स दिखाई दिए, जो पहल की प्रभावशीलता को चुनौती दे रहे हैं।
- इसके बावजूद, ऑस्ट्रेलिया ने इन परियोजनाओं से लाखों टन कार्बन क्रेडिट जमा किया था, जिसका उद्देश्य प्रदूषणकारी उद्योगों से उत्सर्जन की भरपाई करना है।

घोर विफलता:

- विशेषज्ञों ने स्थिति को "घोर विफलता" के रूप में वर्णित किया है, जो दावा किए गए कार्बन पृथक्करण और वास्तविक वन विकास के बीच विसंगति को उजागर करता है।

- ऑस्ट्रेलिया ने इस योजना के लिए लगभग 42 मिलियन हेक्टेयर भूमि आवंटित की, इसे दुनिया की सबसे बड़ी प्राकृतिक कार्बन ऑफसेट परियोजनाओं में से एक के रूप में प्रस्तुत किया।

संदिग्ध कार्बन क्रेडिट:

- उपग्रह इमेजरी पर आधारित अध्ययन ने इस परियोजना से जुड़ी कार्बन क्रेडिट की वैधता पर संदेह उठाया।
- प्रत्येक टन कार्बन पृथक्करण उद्योगों को उनके उत्सर्जन की भरपाई के लिए बेचे जाने वाले कार्बन क्रेडिट में तब्दील हो जाता है, लेकिन मैकिंटोश ने सुझाव दिया कि ऑस्ट्रेलिया अनिवार्य रूप से गैर-मौजूद कार्बन पृथक्करण के आधार पर क्रेडिट बेच रहा था।
- ऑस्ट्रेलिया की जलवायु नीति को "जलवायु युद्ध" कहे जाने वाले राजनीतिक संघर्षों के बीच महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।
- उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध होने के बावजूद, ऑस्ट्रेलिया गैस और थर्मल कोयले का एक प्रमुख निर्यातक बना हुआ है, जिससे उसके कार्बन पदचिह्न में वृद्धि हो रही है।
- असफलताओं के बावजूद, ऑस्ट्रेलिया का लक्ष्य 2050 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ, 2005 के स्तर से 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को 43% कम करना है।
- हालाँकि, हालिया खुलासे ऑस्ट्रेलिया के उच्च कार्बन उत्सर्जन को संबोधित करने के लिए मजबूत जलवायु नीतियों और प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

संपादकीय-द हिन्दू

संपादकीय:

चीन-ताइवान संघर्ष को रोकना:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध:

विषय: भारत के हितों पर भारतीय परिदृश्य पर विकसित और विकासशील देशों की नीतियां और राजनीति का प्रभाव।

मुख्य परीक्षा: चीन-ताइवान संघर्ष पर भारत का संभावित रुख।

संदर्भ:

- समय बीतने के साथ, चीन का ताइवान पर कब्ज़ा अपरिहार्य प्रतीत हो रहा है। यदि यह प्रक्रिया जबरदस्ती है, तो इसके भारत और विश्व पर आर्थिक और सुरक्षा प्रभाव हो सकते हैं।

यथास्थिति बनाए रखने की आवश्यकता:

- आर्थिक हित: चीन और ताइवान के बीच वर्तमान यथास्थिति को बनाए रखने में भारत का निहित स्वार्थ है, विशेष रूप से बढ़ते व्यापार संबंधों और रणनीतिक साझेदारी के कारण।
- विनाशकारी लागतों से बचना: वैश्विक व्यापार के अंतर्संबंध और इसके कारण होने वाले संभावित व्यवधान को देखते हुए, चीन और ताइवान के बीच किसी भी संघर्ष का भारत की अर्थव्यवस्था पर गंभीर असर होगा।
- क्षेत्रीय वृद्धि से बचना: संघर्ष ताइवान से आगे बढ़ सकता है, जो संभावित रूप से भारत-चीन संबंधों और वैश्विक औद्योगिक क्षमताओं को प्रभावित कर सकता है, जिसके स्थिरता और सुरक्षा पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

भारत की रणनीतिक अनिवार्यताएँ:

- दीर्घकालिक अंतर्राष्ट्रीय स्थिति: भारत ताइवान को लेकर संघर्ष के अपनी अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर संभावित असर को पहचानता है।
- परिणाम के आधार पर, भारत के रणनीतिक हितों पर काफी असर पड़ सकता है, ऐसे परिदृश्य को रोकने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

- हालाँकि भारत अमेरिका का औपचारिक सहयोगी नहीं है, लेकिन यह सैन्य आधुनिकीकरण और अनुकूल रणनीतिक माहौल के लिए अमेरिकी समर्थन पर निर्भर है।
- ताइवान पर संघर्ष इस निर्भरता को बाधित कर सकता है और क्षेत्रीय शक्ति की गतिशीलता को बदल सकता है।

भारत के लिए नीति विकल्प:

- अंतर्राष्ट्रीय कानून का उपयोग: भारत मौजूदा समझौतों और मानदंडों के पालन पर जोर देते हुए चीन-ताइवान विवाद के शांतिपूर्ण समाधान की वकालत करने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचे का लाभ उठा सकता है।
- आख्यान निर्माण और कूटनीति: समन्वित राजनयिक प्रयासों और कथा निर्माण के माध्यम से, भारत क्षेत्र में स्थिरता के महत्व को मजबूत करते हुए, ताइवान के प्रति चीन की किसी भी आक्रामक कार्रवाई का सक्रिय रूप से विरोध कर सकता है।
- आर्थिक जोखिम कम करना: भारत संभावित संघर्ष से जुड़े आर्थिक जोखिमों को कम करने, अपने हितों की रक्षा करने और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान करने के लिए कदम उठा सकता है।
- सहयोगियों को सैन्य सहायता: सीधे तौर पर संघर्ष में शामिल न होते हुए भी, भारत हिंद महासागर में अमेरिकी सेनाओं को सहायता प्रदान कर सकता है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा और चीनी आक्रामकता के खिलाफ उसकी प्रतिबद्धता का संकेत है।

निष्कर्ष:

- चीन-ताइवान संघर्ष को रोकने की दिशा में भारत का दृष्टिकोण उसकी रणनीतिक अनिवार्यताओं और आर्थिक हितों द्वारा निर्देशित है। यथास्थिति बनाए रखकर, कूटनीतिक पहल करके और अपने अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का लाभ उठाकर, भारत अपने रणनीतिक उद्देश्यों को आगे बढ़ाते हुए संभावित संघर्ष से जुड़े जोखिमों को कम करना चाहता है।

सारांश:

- भारत का लक्ष्य चीन-ताइवान संघर्ष को रोकना, आर्थिक हितों को प्राथमिकता देना, क्षेत्रीय तनाव से बचना और अपनी रणनीतिक स्थिति की रक्षा करना है। राजनयिक प्रयासों और नीति विकल्पों के माध्यम से, भारत स्थिरता बनाए रखना चाहता है और अपनी रणनीतिक अनिवार्यताओं को आगे बढ़ाना चाहता है।

डब्ल्यूटीओ की निवेश सुविधा वार्ता अवैध नहीं है:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

अर्थव्यवस्था:

विषय: अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण का प्रभाव।

मुख्य परीक्षा: डब्ल्यूटीओ में निवेश सुविधा वार्ता।

विवरण: डब्ल्यूटीओ की निवेश सुविधा वार्ता

- विकास के लिए निवेश सुविधा (आईएफडी) समझौते को अपनाने में विफलता अबू धाबी में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के 13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन (एमसी13) का एक महत्वपूर्ण परिणाम था।
- आईएफडी समझौते के लिए बातचीत 2017 में संयुक्त वक्तव्य पहल के माध्यम से शुरू हुई, जिसमें 70 देश शामिल थे।
- विरोध के बावजूद, आईएफडी समझौते को 166 डब्ल्यूटीओ सदस्य देशों में से लगभग 120 के समर्थन से नवंबर 2023 में अंतिम रूप दिया गया था।

भारत की चिंताएँ और तर्क:

- भारत ने दक्षिण अफ्रीका के साथ मिलकर आईएफडी समझौते को डब्ल्यूटीओ नियम पुस्तिका में शामिल करने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- भारत की प्राथमिक चिंताएं डब्ल्यूटीओ ढांचे के भीतर निवेश की प्रकृति और आईएफडी समझौते को एकीकृत करने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के इर्द-गिर्द घूमती हैं।

- भारत का तर्क है कि निवेश व्यापार से अलग है और सवाल करता है कि क्या इसे विश्व व्यापार संगठन के दायरे में होना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त, भारत का दावा है कि आईएफडी समझौते पर बातचीत की प्रक्रिया में आवश्यक अधिदेशों का अभाव है, जैसा कि पिछले डब्ल्यूटीओ निर्णयों में स्थापित किया गया था।

निवेश बनाम व्यापार और प्रक्रिया संबंधी चिंताएँ:

- निवेश और व्यापार के बीच अंतर पर जोर देते हुए भारत का तर्क है कि निवेश डब्ल्यूटीओ के क्षेत्र में नहीं आना चाहिए।
- व्यापार और निवेश के बीच आर्थिक अंतर्संबंधों के बावजूद, भारत डब्ल्यूटीओ ढांचे के भीतर निवेश को शामिल करने की उपयुक्तता पर सवाल उठाता है।
- इसके अलावा, भारत पिछले डब्ल्यूटीओ निर्णयों का हवाला देते हुए आईएफडी समझौते पर बातचीत में अपनाई गई प्रक्रिया की वैधता को चुनौती देता है जो नई वार्ता के लिए जनादेश स्थापित करता है।

कानूनी और प्रक्रियात्मक विचार:

- विश्व व्यापार संगठन के ढांचे के भीतर निवेश समझौतों को शामिल करने के लिए कानूनी आधार पर बहस की जाती है, विशेष रूप से मल्टीलेटरल (multilateral) और प्लुरिलेटरल (plurilateral) वार्ताओं के बीच अंतर के संबंध में।
 - बहुपक्षीय समझौते (multilateral agreements) सभी डब्ल्यूटीओ सदस्यों के लिए बाध्यकारी हैं और इन्हें डब्ल्यूटीओ समझौते के साथ समग्र रूप से अनुमोदित किया जाना चाहिए। बहुपक्षीय समझौते (Plurilateral agreements) वैकल्पिक होते हैं और केवल उन सदस्यों को बाध्य करते हैं जो उन्हें अनुमोदित करना स्वीकार करते हैं।
- हालांकि नए मुद्दों पर बहुपक्षीय वार्ता शुरू करने के खिलाफ एक नकारात्मक जनादेश है, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह जनादेश बहुपक्षीय वार्ता तक फैला हुआ है।

- बहुपक्षीय समझौतों (Plurilateral agreements) पर आम सहमति तक पहुंचने में चुनौतियों को देखते हुए, आईएफडी जैसे बहुपक्षीय समझौते डब्ल्यूटीओ के विधायी कार्य को पुनर्जीवित करने की क्षमता रखते हैं।
- डब्ल्यूटीओ के नियामक ढांचे को अद्यतन करने और बढ़ाने के लिए उनके संभावित लाभों को देखते हुए, भारत से बहुपक्षीय समझौतों ((Plurilateral agreements) पर अपने रुख पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया गया है।

सारांश:

- अबू धाबी में डब्ल्यूटीओ के 13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में विकास के लिए निवेश सुविधा (आईएफडी) समझौते को अपनाने में विफलता डब्ल्यूटीओ ढांचे में निवेश को एकीकृत करने और बातचीत प्रक्रिया की वैधता पर भारत की चिंताओं को उजागर करती है।

प्रीलिम्स तथ्य:**1. आईसीएमआर फेफड़ों के कैंसर के प्रबंधन के लिए साक्ष्य आधारित मानदंड लाने के लिए तैयार:****संदर्भ:**

- भारत में, जहां कैंसर से संबंधित मौतों में से 10% फेफड़ों के कैंसर के कारण होती हैं, वहां साक्ष्य-आधारित दिशानिर्देशों की अनुपस्थिति एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

संबंधित जानकारी:

- इस अंतर को पाटने के लिए, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) एक व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-विश्लेषण पहल शुरू कर रही है।
- रोकथाम, स्क्रीनिंग, निदान और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापक समीक्षा करने के लिए शोधकर्ताओं को रुचि की अभिव्यक्ति (ईओआई) प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है।

- इस पहल का उद्देश्य व्यवस्थित रूप से गुणवत्ता का आकलन करने के लिए GRADE टूल का उपयोग करके मौजूदा साक्ष्यों को संश्लेषित करना है।
- निर्णय के साक्ष्य (ईटीडी) ढांचे का उपयोग करके, नैदानिक अभ्यास का मार्गदर्शन करने और रोगी परिणामों में सुधार करने के लिए सिफारिशें तैयार की जाएंगी।

महत्व:

- यह पहल भारत में फेफड़ों के कैंसर प्रबंधन को बढ़ाने और एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता का समाधान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

2. 'भारत में 2015 के बाद से टीबी के नए मामलों में 16% की गिरावट आई':**संदर्भ:**

- तपेदिक (टीबी) के खिलाफ भारत की लड़ाई में प्रगति के आशाजनक संकेत दिख रहे हैं, वर्ष 2015 के बाद से इसके मामले और मृत्यु दर दोनों में उल्लेखनीय गिरावट आई है।

संबंधित जानकारी:

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की भारत टीबी रिपोर्ट 2024 के अनुसार, टीबी की घटनाओं में 16% की कमी और मृत्यु दर में 18% की कमी आई है।
- विशेष रूप से, टीबी अधिसूचनाओं में निजी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का योगदान 2023 में 17% बढ़ गया, जो बेहतर सहयोग को दर्शाता है।
- कोविड-19 महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद, भारत का राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) लचीला बना रहा और लगभग 1.89 करोड़ बलगम स्मीयर परीक्षण किए।

महत्व:

- इस बीमारी को खत्म करने के लिए 2025 का लक्ष्य निर्धारित करने के साथ, भारत के सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के निरंतर प्रयास और जुड़ाव टीबी नियंत्रण और उन्मूलन के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. भारत में उपराज्यपालों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- राज्यपालों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और उपराज्यपालों की नियुक्ति प्रधान मंत्री द्वारा की जाती है।
- उपराज्यपालों के पास राष्ट्रपति के विचार के लिए विधेयकों को आरक्षित करने या विधानसभा को भंग करने की सिफारिश करने जैसी शक्तियां होती हैं।
- उपराज्यपालों को केवल विधान सभा वाले केंद्र शासित प्रदेशों में तैनात किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं/हैं?

- केवल I
- केवल II और III
- केवल II
- I, II, और III

उत्तर: c

व्याख्या:

प्रश्न 2. ग्लोबल वार्मिंग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

कथन 1: ग्लोबल वार्मिंग कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों के वायुमंडल में छोड़ने के कारण होती है।

कथन 2: ग्लोबल वार्मिंग केवल मानवजनित कारणों से होती है।

कथन 3: मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है जिसका मुख्य उद्देश्य ग्लोबल वार्मिंग का मुकाबला करना है।

विकल्प:

- (a) केवल कथन 1 सही है।
- (b) कथन 1 और 2 सही हैं।
- (c) कथन 2 और 3 सही हैं।
- (d) तीनों कथन सही हैं।

उत्तर: a

व्याख्या:

प्रश्न 3. रोहिंग्या लोगों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

कथन I: रोहिंग्या लोग मुख्य रूप से म्यांमार के रखाइन राज्य में रहते हैं।

कथन II: रोहिंग्या मुख्य रूप से बौद्ध धर्म का पालन करते हैं।

कथन III: रोहिंग्या लोग उन अल्पसंख्यक समूहों में से एक हैं जो नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 से लाभान्वित होते हैं।

कितने कथन सही हैं/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) उपरोक्त सभी

उत्तर: a

व्याख्या:

प्रश्न 4. भारत में नगर पालिका चुनावों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

कथन 1: मसाला बॉन्ड अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय संस्थाओं द्वारा जारी किए गए बॉन्ड हैं।

कथन 2: मसाला बॉन्ड जारी करने वाला निवेशकों को भारतीय रुपये में ब्याज और मूलधन का भुगतान करता है।

कौन सा कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: c

व्याख्या:

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में हिमालय केवल पाँच राज्यों में फैला हुआ है।
2. पश्चिमी घाट केवल पाँच राज्यों में फैला हुआ है।
3. पुलिकट झील केवल दो राज्यों में फैली हुई है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1 और 3

उत्तर: b

व्याख्या:

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. डब्ल्यूटीओ में निवेश सुविधा वार्ता को लेकर भारत का तर्क है कि निवेश व्यापार से अलग है और इसे विश्व व्यापार संगठन के दायरे से बाहर होना चाहिए। कथन पर टिप्पणी कीजिए। (15 अंक,

250 शब्द) [जीएस-3, अर्थव्यवस्था]

प्रश्न 2. चीन-ताइवान संघर्ष के भारत पर प्रभाव बताइये। (15 अंक, 250 शब्द) [जीएस-2, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध]

